वो कौन था ?-1

“मैंने अपने जीवन की व्यथा गाथा अपनी पहली कहानी ‘शराबी पति‘ के तीन भागों में लिखी थी। उस घटनाक्रम के बाद मैंने कभी नहीं सोचा था कि मेरे जीवन में और कोई ऐसी घटना हो सकती है क्योंकि मैंने पति के प्रति वफादार रहने का निर्णय ले लिया था। हम लोग बंगलोर में करीब 7-8 […] ...”

Story By: (malinisharma154)
Posted: Thursday, July 24th, 2014
Categories: लेस्बीयन सेक्स स्टोरीज
Online version: वो कौन था ?-1

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

वो कौन था ?-1

मैंने अपने जीवन की व्यथा गाथा अपनी पहली कहानी 'शराबी पति' के तीन भागों में लिखी थी।
उस घटनाक्रम के बाद मैंने कभी नहीं सोचा था कि मेरे जीवन में और कोई ऐसी घटना हो सकती है क्योंकि मैंने पति के प्रति वफादार रहने का निर्णय ले लिया था।

हम लोग बंगलोर में करीब 7-8 महीनों से रह रहे थे, मेरा पति रमेश ओवरटाइम करके ज्यादा पैसे कमाने के चक्कर में रहता था।
इससे पहले की बात जानने के लिए मेरी पहली कहानी 'शराबी पति' जरूर पढ़ें !

ज्यादा पैसे कमाने के लिए रमेश लगभग हर दिन रात 10 बजे आता था इसके बाद ही हम लोग खाना खाते थे।

हमारी बिल्डिंग में हमारे ठीक सामने के फ्लैट में दो लड़कियाँ रहती थी जिनका नाम माला और मनोरमा था। दोनों कॉलेज में पढ़ती थी, अकेली रहती थी, उनके परिवार पास ही एक गांव श्रीपुर में रहते थे।
उन लोगों से हमारे ज्यादा वास्ता नहीं था, बस हाय-हेल्लो हो जाती थी।

इन दोनों लड़कियों की हाइट मुझसे कम थी, दोनों का रंग गोरा था, इनमें माला ज्यादा सुन्दर थी, उसके काले घुंघराले बाल और बड़ी बड़ी आँखें थी जो किसी भी मर्द के लिए आकर्षण का केंद्र हो सकती थी।

एक बार रात के 10 बजे मैं और रमेश बस खाना खाने की तैयारी में थे कि दरवाजे की घण्टी बजी, देखा तो माला और मनोरमा दोनों खड़ी थी।

माला ने मुझसे कहा- भैया (रमेश, मेरे पति) से कह कर हमें दूध और ब्रेड मंगवा दो, पास वाली दुकान बंद हो गई है, हमारा टिफिन वाला अभी तक नहीं आया है और फोन भी नहीं उठा रहा है।

रमेश बोला- कोई बात नहीं, अभी हम लोगों ने भी खाना नहीं खाया है, मालिनी मैं बहुत थक गया हूँ तुम थोड़ी रोटी और बना दो इन लोगो को यहीं खाना खिला देते हैं।
मैंने सोचा कि ठीक है, पति परेशान होगा !

उन लोगों को खाना बनाकर खिलाया, तो दोनों खुश हो गई, बोली- कितने दिन बाद अच्छा खाना खाया है। हमारा टिफिन वाला एक टिफिन के 50 रूपये लेता है और कभी टिफिन पहुँचाता है कभी नहीं पहुँचाता है।

मैं सोते वक्त सोच रही थी कि अगर मैं इन्हें रोज खाना बना कर दूँ तो 100 रूपये रोज कमा सकती हूँ, पहले मैं हेमंत के घर काम तो करती ही थी।

दूसरे दिन मैंने दोनों से बात की, वो दोनों मान गई इसके बाद हमारी उन दोनों से अच्छी दोस्ती हो गई, मैं अक्सर उनके कमरे में जाने लगी और वे भी हमारे कमरे पर आती थी।

रमेश ज्यादातर ड्यूटी पर होता था, वे मेरी बेटी माही को खिलाती थी जो अब तीन साल की हो चुकी थी।

एक दिन मैं उनके कमरे पर गई तो मुझे एक दो सेक्सी किताबें दिखी, धीरे धीरे मुझे पता लग गया कि दोनों सेक्सी वीडियो भी देखती हैं और नेट पर भी लड़कों से चैट करती हैं।

दोनों में कुछ पर्दा नहीं था, माला का एक बॉयफ्रेंड भी था जो उससे मिलने आता था, उसका नाम रोहित था जो एक अमीर घराने का खूबसूरत लड़का था, वो मुझे बड़ी गन्दी नजर से देखता था, मुझे बिल्कुल पसंद नहीं था।

एक दिन की बात है, रमेश की कंपनी में जरूरी काम आ गया, उसने मुझे फोन करके बताया कि रात को घर नहीं आ सकता।
मैं बैडरूम में जाकर सो गई पर नींद नहीं आ रही थी, अकेले होने से थोड़ा डर लग रहा था, माही सो गई तो मैं भी सो गई पर सुबह चार बजे मेरे नींद खुल गई, मुझे लगा कि माला और मनोरमा के कमरे से कुछ आवाज आ रही है।

मैं डरते डरते बाहर निकली, उनके कमरे की लाइट जल रही थी, मुझे लग रहा था कि वो इम्तिहान होने के कारण पढ़ाई कर रही होंगी। पर मेरा ध्यान गया, मुझे कम्प्यूटर पर सेक्सी वीडियो चलने का आभास हुआ क्योंकि आआअ …उउउ ई ई एई ई …आह …आह …आह आह…की आवाज आ रही थी। ऐसे वीडियो मैं हेमंत के साथ देख चुकी थी।

मुझे गुस्सा आया कि माँ-बाप ने इनको पढ़ने भेजा है और ये यहाँ यह सब कर रही हैं।

माला और मनोरमा आपस में कुछ बात कर रही थी, मुझे बहुत ही कम सुनाई आ रहा था पर वो कुछ इस तरह था- माला पहले मेरे दबा दे, फिर मैं तेरे दबाती हूँ… हाय चिपक जा रे… मेरे होटों पर किस कर दे माला… हाय अब नहीं रहा जा रहा… हाय जोर से दबा …और जोर से…

मैं समझ गई कि दोनों लेस्बियन हैं।

‘हाय मनोरमा डिल्डो निकाल कर मेरी चूत में डाल दे… पता नहीं कब कोई लड़का मेरी लेगा… हाय मर गई… हाय…’
मैं कमरे में आकर सो गई, मैंने सोचा- मरने दो, मुझे क्या करना है।

इसके बाद मैं उन लोगों से थोड़ी दूर रहने लगी।

एक दिन दोपहर में माला मेरे कमरे पर आई, बोली- आज एक ही टिफिन बनाना, मनोरमा

गांव जा रही है, उसे कोई लड़का देखने आ रहा है।

मैंने कहा- ठीक है !
फिर वो बोली- भाभी, एक कप चाय बना दो न… मेरा सर दुःख रहा है।

वो सोफे पर बैठ गई और टीवी चालू कर लिया, उस पर एक सेक्सी गाना चल रहा था।

मुझे आया देख कर वो चैनल बदलने लगी, मैंने कह दिया- रहने दो, कोई फर्क नहीं पड़ता !
मेरे मुँह से निकल गया- तुम तो इससे ज्यादा कम्प्यूटर पर देख ही चुकी हो।
उसका चेहरा लाल हो गया, वो एकदम चुप हो गई।

मैंने कहा- माला, डर मत, मैं किसी को नहीं कहूँगी। अरे उस दिन सुबह तुम और मनोरमा जब वो देख रही थी तो…

मैंने उसे उस दिन की सारी घटना बता दी, वो नीचे देखने लगी।
मैंने मुस्कुरा कर कहा- डर मत, मैं किसी को नहीं बताऊँगी।
वो चाय पीकर चली गई।

इसके बाद माला का मुझसे डर खत्म हो गया, वो मेरे सामने ही सेक्सी पुस्तक पढ़ लेती थी, कम्प्यूटर पर एडल्ट कंटेंट हो तो भी बंद नहीं करती थी।

और रोहित के साथ कमरे में घण्टों बंद रहने के बाद भी सामान्य रूप से पेश आती थी, मैं उसकी राजदार बन चुकी थी।

एक दिन मैं टिफिन लेकर पहुँची तो वो सेक्सी साइट देख रही थी, मैं भी देखने लगी, मुझे भी हेमंत के साथ ये सब देखने का अनुभव था।मैंने उसे दो चार सेक्सी साइट और सविता भाभी के कार्टून दिखाए।

इस दिन के बाद हम दोनों एक साथ पोर्न साइट देख लेते थे।

उस दिन फिर रमेश रात में रुकने वाला था, माही सो गई थी, मैं खाना देने माला के पास गई।
वो बाथरूम में थी, उसका कम्प्यूटर चालू था मैंने आवाज दी- माला, खाना ले लो !
‘भाभी, मैं आती हूँ, तुम टेबल पर रख दो…’

मैंने टेबल पर टिफिन रख दिय और कुर्सी पर बैठ कर कम्प्यूटर पर सविता भाभी की कॉमिक्स देखने लगी। माला ने आकर खाना खाया।

मैं चुदाई के चित्र और गंदे वाकया पढ़ कर उत्तेजित हो रही थी, माला मेरे पीछे आ कर खड़ी हो गई और कॉमिक्स पढ़ने लगी।
उसने मेरे कंधे पर हाथ रखा, मुझे उसके नर्म हाथ बहुत अच्छे लगे। धीरे धीरे उसने मेरे गले में बांहे डाल दी और पीछे से मेरे कंधे पर सर रख बड़े ध्यान से चुदाई की कहानी पढ़ने लगी।
मुझे बहुत ही अच्छा लग रहा था।
थोड़ी देर बाद उसने मेरे गाल का चुम्मा ले लिया !

जवान लड़की के नर्म होंटों का चुम्मा… हाय…
मेरी हालत ख़राब होने लगी, उत्तेजना सारे शरीर में फ़ैल गई, मैं चुदवाने के लिए उतावली हो गई।

तभी उसके हाथ मेरे वक्ष पर फिसलने लगे तो मेरी साँस फूलने लगी, बड़ी मुश्किल से मेरे मुख से निकला- मा.अ.अ ल ला… वो… ये क्या कर रही हो…
मेरा दिल जोर से धड़क रहा था, मजा भी आ रहा था, डर भी लग रहा था।
माला बोली- भाभी, डरो मत, बोलो कैसा लग रहा है…

उसने मेरे कंधे पर हाथ रखा और बोली- मजा आ रहा है न…
फिर मेरे गालों पर चुम्बन किया…

चुदास के मारे मेरी आँखें बंद होने लगी, मैंने कुर्सी पर पीठ टिका दी, पैर फ़ैल गए, मैं निढाल हो गई।

माला के हाथ मेरे ब्लाउज का बटन खोलने लगे, मैंने कांपते हाथ से उसे रोका पर उसने ताकत लगा कर दोनों स्तन ब्लाउज़ और ब्रा की कैद से आजाद कर दिए और दबाने लगी।
मेरे मुख से हाय… हाय… हाय..अह… निकलने लगा।

माला ने मेरी साड़ी और पेटीकोट उठा कर जांघ पर रख दिया, मेरी जांघों, पैर और सारे बदन को सहलाने लगी, बोली- हाय भाभी, क्या बदन पाया है तुमने ! लम्बा कद, एकदम गोरा बदन, मस्त बड़े चूचे और चूतड़ ! काश तुम्हारा एक लंड भी होता… मैं चुद कर धन्य हो जाती…

भाभी मेरा लोअर और टी शर्ट उत्तर कर मुझे नंगा कर दो प्लीज… हाय… हाय… मैं मर गई भाभी !
मैंने उसे पूरी नंगी किया, अब हम दोनों बेड पर आ गए, एक दूसरे का खूब चुम्मा लिया, बूबे दबाये, चिपका चिपकी की।
वो मुझसे ऐसे चिपक रही थी जैसे वो मेरी बीवी हो !

इसके बाद उसने डिल्डो निकाला, मुझे चित्त लिटा दिया और मेरी टांगें फैला दी।
उस 8 इंच लम्बे और मोटे डिल्डो को क्रीम लगा कर उसने मेरी चूत पर जमाया और धीरे धीरे घुसाने लगी।
वो अंदर घुसता जा रहा था, मुझे मजा आ रहा था।
वो धीरे धीरे हिला रही थी।

मेरे चूतड़ अपने आप उछलने लगे, मैं मजे लेकर चुदने लगी थी- हाय..हाय…हाय… अहा …सी…सी…सीय …सीय…
मैं चुदे जा रही थी- जोर से माला… जोर से.. जोर से… और जोर से… और जोर से… हाय कितना मजा आ रहा है… उह्ह्ह… उह्ह्ह …ऑफ़..ऊफ़्फ़ ऊफ़्फ़…हाय मर गई… मर गई…झड़ गई…अह अह अह… उउउ हाय रे माला… मेरे बूबे दबा दे… कमीनी, ये क्या कर दिया… मजा आ गया…
मैं बुरी तरह चुद गई थी।

इसके बाद माला चित होकर लेट गई, मैंने उसे उसी तरह डिल्डो से चोद दिया जैसे मैं खुद चुदी थी।
इसके बाद मेरे और माला के बीच में समलैंगिक सम्बन्ध हो गए थे।
कहानी जारी रहेगी।

Other stories you may be interested in

मम्मीजी आने वाली हैं-5

स्वाति भाभी अब कुछ देर तो ऐसे ही अपनी चूत से मेरे लण्ड पर प्रेमरस की बारिश सी करती रही फिर धीरे धीरे उसके हाथ पैरो की पकड़ ढीली हो गयी। अपने सारे काम ज्वार को मेरे लण्ड पर उगलने […]
Full Story >>>

विधवा औरत की चूत चुदाई का मस्त मजा-3

कहानी के पिछले भाग में आपने पढ़ा कि मैं उस विधवा औरत की बरसों से प्यासी चूत को चोदने में कामयाब हो गया था. मगर मुझे लग रहा था कि शायद कहीं कोई कमी रह गयी थी. मैंने तो अपना […]
Full Story >>>

कमसिन पड़ोसन की सील तोड़ चुदाई

दोस्तो, मेरा नाम संजय गुप्ता है मेरी उम्र कोई 21 साल है. मेरे माता पिता सामान्य वर्ग से संबंध रखते हैं और हमारी फैमिली एक साधारण फैमिली है. मेरे माता पिता ने मुझे बहुत ही अच्छी शिक्षा दिलवाई. मैं बचपन […]
Full Story >>>

चाची की चूत और अनचुदी गांड मारी

नमस्कार दोस्तो, मेरा नाम रंजन देसाई है. मेरी उम्र 27 साल है और मैं कोल्हापुर, महाराष्ट्र का रहने वाला हूं. मैंने अन्तर्वासना पर बहुत सारी कहानियां पढ़ी हैं. ये मेरी पहली कहानी है जो मैं अन्तर्वासना पर लिख रहा हूं. […]
Full Story >>>

मेरी गांड पहली बार कैसे चुदी

नमस्कार मेरे प्यारे अन्तर्वासना के साथियो, मैं लगभग 4 वर्षो से अन्तर्वासना का नियमित पाठक हूँ। मैंने अन्तर्वासना की लगभग सारी कहानियां पढ़ी हैं। मुझे उनमें से सनी शर्मा की कहानियां बहुत पसंद हैं. अब मुझे लगता है कि मुझे […]
Full Story >>>